



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 124-130

Received: 05-02-2025
Accepted: 17-03-2025

भील जनजाति की कला से प्रेरित डिजाइनों का अन्वेषण

¹डॉ. अंजली पाण्डेय, ²प्राजक्ता उदय जोशी, ³डॉ. प्रतिभा तिवारी, ⁴प्रो. आर. सी. मिश्रा

¹पत्राचार लेखक, एसोसिएट प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

²शोधार्थी, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

³विजिटिंग प्रोफेसर, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

⁴कुलपति, महाकौशल विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.15807941>

Corresponding Author: डॉ. अंजली पाण्डेय

सारांश

अध्ययन में पारंपरिक कलात्मक तत्वों को आधुनिक वस्त्र डिजाइन में अपनाने की भी खोज की गई है, जो विरासत और नवाचार के बीच तालमेल की खोज करता है। भील पेंटिंग कहानियों और लोककथाओं को दर्शाती हैं। पेंटिंग आदिवासी देवताओं और सांस्कृतिक प्रतीकों को दर्शाती हैं, जो सीधे पवित्र और धार्मिक अवधारणाओं से संबंधित हैं। हालांकि यह तेजी से कम हो रहा है और इसके शब्दों में यह तेजी से कम हो रहा है और विलुप्त होने के कागार पर है, जिसका मुख्य कारण है भोलापन। भील पेंटिंग की सुरक्षा और संरक्षण के इरादे से परिधान उद्योग द्वारा एक दृष्टिकोण की कल्पना की जा सकती है।

मूलशब्द: कलात्मक, पवित्र, धार्मिक, जाति, जनजाति, जीवन।

प्रस्तावना

भारत के सबसे बड़े स्वदेशी समुदायों में से एक भील जनजाति, संधारणीय जीवन और समृद्ध कला संस्कृति के बीच एक गहन संबंध का उदाहरण है। भील लोग, जो मुख्य रूप से देश के मध्य और पश्चिमी क्षेत्रों में रहते हैं, पीढ़ियों से संधारणीय कृषि तकनीकों और संसाधन प्रबंधन का अभ्यास करते रहे हैं जो प्रकृति के प्रति उनके गहरे सम्मान के साथ सरेखित हैं। वे सीढ़ीदार खेती, फसल चक्र और जल संरक्षण विधियों में संलग्न हैं जो न केवल उनकी आजीविका सुनिश्चित करते हैं बल्कि उनके आसपास के पारिस्थितिक संतुलन को भी संरक्षित करते हैं।

यह कलात्मक अभिव्यक्ति न केवल उनकी सांस्कृतिक विरासत के दृश्य प्रतिनिधित्व के रूप में कार्य करती है बल्कि कहानियों, अनुष्ठानों और पारंपरिक ज्ञान को व्यक्त करने का माध्यम भी है। संधारणीय जीवन प्रथाओं को अपने विशिष्ट कला रूपों के साथ जोड़कर, भील जनजाति प्राकृतिक दुनिया के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध को बढ़ावा देते हुए अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदर्शित करती है।

यह जीवंत कला रूप जनजाति के लोकगीत, परंपराओं और रोजमर्रा की जिंदगी में गहराई से निहित है, और चमकीले रंगों और सरल लेकिन अभिव्यक्ति के उपयोग की विशेषता है। भील संस्कृति अनुष्ठानों, संगीत, नृत्य और कहानी कहने में समृद्ध है, जो सभी उनके सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग हैं और अक्सर उनकी कला में दर्शाए जाते हैं। भीलों का प्रकृति से गहरा जुड़ाव है, जो न केवल उनकी कला में बल्कि उनकी पारंपरिक प्रथाओं और मान्यताओं में भी स्पष्ट है। वे कई त्योहार मनाते हैं, जिनमें से कई कृषि चक्रों से जुड़े हैं, और इन उत्सवों के साथ अक्सर पारंपरिक गीत, नृत्य और कला का निर्माण होता है। यह कला भीलों के लिए अपने विचारों, विश्वासों और आख्यानों को व्यक्त करने का एक माध्यम है, जो उनकी प्राचीन परंपराओं और समकालीन दुनिया के बीच की खाई को पाटती है।

आज, भील कला न केवल एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, बल्कि समुदाय के कई लोगों के लिए आजीविका का स्रोत भी है, क्योंकि इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता और प्रशंसा मिली है। भील कला प्रकृति के साथ एक प्राचीन संबंध से उत्पन्न होती है और

सहज और बुनियादी है। भील ज्यादातर कृषि करने वाले लोग हैं, और उनकी आजीविका उस भूमि के इर्द-गिर्द घूमती है जिस पर वे काम करते हैं। यह तथ्य कि यह कला पीढ़ियों से चली आ रही है - अधिकांश कलाकारों ने इसे अपनी माताओं से सीखा है - इसे विशेष रूप से अद्वितीय बनाता है। भील कला अक्सर अनुष्ठानिक भी होती है। प्रत्येक कलाकृति लोगों, जानवरों, कीड़ों, देवताओं और त्योहारों की छवियों का उपयोग करके उस स्थान के बारे में एक कहानी बताती है।

कहानियों में नियमित रूप से सूर्य और चंद्रमा को दिखाया जाता है। भील चित्रकला का उपयोग कहानियों और किंवदंतियों को बताने के लिए किया जाता है। मृत्यु और जन्म दर्ज किए जाते हैं। धार्मिक आयोजनों का स्मरण किया जाता है। त्योहारों के दौरान, इन चित्रों को देवताओं को उपहार के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है।

साहित्य की समीक्षा

श्री एम. वाल्या (2022) भारत में अफ्रीकी महाद्वीप के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है। समाज में रहने वाले कमज़ोर वर्ग के लोगों को न्याय दिलाने के लिए न्यायसंगत नीति का निर्माण और उसका कार्यान्वयन राज्य की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। भारत में जनजातीय समुदाय अपने दैनिक जीवन में कई मुद्दों से जूझ रहा है और रोज़मरा की ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों के लिए संघर्ष कर रहा है, जो दूसरों को आसानी से मिल जाती हैं। जनजातीय विकास हमेशा से ही केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के लिए बड़ी चिंता का विषय रहा है।

रस्तोगी, ट्रिकल (2024) यह पुस्तक भारत के हृदय में स्थित मध्य प्रदेश राज्य की समृद्ध और विविध कलात्मक विरासत का व्यापक अन्वेषण प्रदान करती है। यह इस विरासत के दो अलग-अलग लेकिन परस्पर जुड़े पहलुओं - पारंपरिक शिल्प और आदिवासी कला रूपों पर प्रकाश डालती है। पुस्तक का पहला भाग मध्य प्रदेश के पारंपरिक शिल्पों पर केंद्रित है, जिसमें बांस शिल्प, कपड़ा बुनाई, बाघ प्रिंट, ज़री ज़रदोज़ी, बटो बाई गुड़िया और अन्य शिल्प जैसे पेपर माचे कला, पत्थर की नक्काशी, लकड़ी के शिल्प और जूट के काम शामिल हैं। प्रत्येक शिल्प का विस्तार से अन्वेषण किया गया है, इसके ऐतिहासिक महत्व, कारीगरों द्वारा नियोजित तकनीकों और इसकी समकालीन प्रासांगिकता पर प्रकाश डाला गया है।

प्रीति (2022) यह शोधपत्र भारत के मध्य प्रदेश के डिंडोरी में 12वीं शताब्दी के कलचुरी काल के कुकरमठ मंदिर पर आदिवासी कला के प्रभाव का पता लगाता है। मंदिर, जिसे ऋणमुक्तेश्वर के नाम से भी जाना जाता है, अपनी मूर्तियों में स्थानीय आदिवासी कला की विशिष्ट विशेषताओं को प्रदर्शित करता है, विशेष रूप से शिव, विष्णु और ब्रह्मा जैसे देवताओं के चेहरे की विशेषताओं, केशविन्यास, आभूषणों और कपड़ों में।

आभास सोनी और ऐश्वर्या (2020) आदिवासी कलाएँ सिर्फ़ कला के लिए नहीं बल्कि उनके जीवन का एक ज़रूरी हिस्सा हैं। यह प्रकृति, पहाड़ों, जंगलों, नदियों, जानवरों आदि के कला रूप को दी गई अभिव्यक्ति है; संस्कृति संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाने वाला सीखा हुआ सामाजिक व्यवहार है और हर संस्कृति के लिए विशिष्ट है। सरल शब्दों में कहें तो, मनुष्य द्वारा विकसित और किसी समाज या संबंधित लोगों के समूह से आपके समय के किसी खास बिंदु पर जुड़ी हर चीज़ को अक्सर उस खास समाज का हिस्सा माना जाता है, जिसे उस खास समाज के सदस्य अपने आप हासिल कर लेते हैं।

शिंदे, मेधा और सिंह, आर. (2021) इस अध्ययन का विषय निमाड़ी संस्कृति की भूमिका है। मध्य प्रदेश में स्थित निमाड़ क्षेत्र अपनी अनूठी क्षेत्रीय संस्कृति के लिए जाना जाता है, जिसमें मध्य प्रदेश और भारतीय सांस्कृतिक इतिहास दोनों के तत्त्व शामिल हैं। विभिन्न परंपराओं और रीति-रिवाजों के बावजूद, वे भारतीय आदिवासी संस्कृतियों के रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करते हैं और उन्हें बनाए रखते हैं तथा अपनी संस्कृति को बहुत समृद्ध और समृद्ध बनाते हैं। उनकी जीवनशैली, जीवन शैली, काम करने का तरीका, रचनात्मकता और इसी तरह की हर चीज वर्तमान सभ्यता में मौजूद चीजों से काफी मिलती-जुलती है। हिंदू मुस्लिम, ईसाई, जैन और सिख जैसे कई धर्मों का समामेलन उनकी संस्कृति में समाया हुआ है।

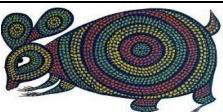
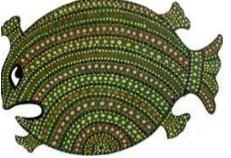
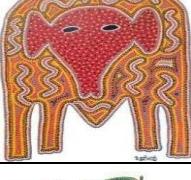
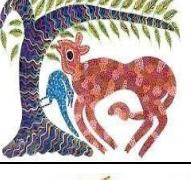
सामग्री और विधियाँ: इस शोध के पीछे मुख्य विचार कपड़ा छपाई में उपयोग के लिए राजस्थानी भील पैटर्न को संशोधित करके डिज़ाइन शीट तैयार करना है। एक खोजपूर्ण शोध दृष्टिकोण का उपयोग किया गया क्योंकि विषय प्रकृति में बहु-विषयक है और डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की एक अनुकूलनीय और अप्रतिबंधित विधि पर भी ध्यान केंद्रित करता है। प्राथमिक डेटा संग्रह तकनीक का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया है। आदिवासी लोगों के पारंपरिक कलात्मक रूपों और तरीकों के बारे में अधिक जानने के लिए, कई तरह के सर्वेक्षण और साक्षात्कार किए गए। पुस्तकों, पत्रिकाओं, स्टिकर, पेटिंग, आदिवासी संग्रहालयों सहित विभिन्न स्रोतों से द्वितीयक डेटा भी एकत्र किया गया था और कला डिज़ाइनों को इकट्ठा करने के लिए स्टिकर का उपयोग किया गया था।

कोरल ड्रा सॉफ्टवेयर और एडोब इलस्ट्रेटर की मदद से मूल रंग और थीम से समझौता किए बिना वैकल्पिक डिज़ाइनिंग तकनीकों में रूपांकनों और डिज़ाइनों को संशोधित करने के विकल्पों पर विचार करने के बाद एकत्र किए गए डेटा को आगे के अनुकूलन के लिए इसकी उपयुक्तता के आधार पर अलग किया गया था। डिज़ाइन विभाग में संकाय सदस्यों और स्नातकोत्तर छात्रों सहित पचास उत्तरदाताओं के एक पैनल को संशोधित डिज़ाइन का मूल्यांकन करने के लिए यादचिक रूप से चुना गया था ताकि इसकी प्रामाणिकता, वृश्य अपील और सांस्कृतिक जागरूकता का आकलन किया जा सके। डेटा एकत्र करने के लिए एक पॉच-बिंदु लिंकर्ट स्केल बनाया गया था।

प्रत्येक रूपांकन के लिए भारित औसत स्कोर (WMS) की गणना की गई और तदनुसार रैंक किया गया। दस रूपांकनों को चुना गया और फिर विशेषज्ञ पैनल द्वारा दी गई शीर्ष रैंकिंग के अनुसार डिज़ाइन विभास के लिए टोट बैग पर शीर्ष रैंक वाले दो रूपांकनों को लागू किया गया। रचनात्मक पारंपरिक कला रूपों की अखंडता को बनाए रखने के लिए कुछ आदिवासी कला विषयों और पैटर्न को डिजिटल रूप से संशोधित और अनुकूलित करके डिज़ाइन बनाए गए थे। इस प्रक्रिया के दौरान न तो रंग और न ही रूपांकनों की विशिष्टता को बदला गया। संशोधित आदिवासी कला के साथ कपड़ा नमूनों के निर्माण में हीट ट्रांसफर प्रिंटिंग तकनीक का उपयोग किया गया था।

परिणाम और चर्चा: विकसित रूपांकनों का मूल्यांकन डिज़ाइन विभाग में पचास यादचिक रूप से चयनित उत्तरदाताओं (संकाय सदस्यों और स्नातकोत्तर छात्रों) के एक समूह द्वारा किया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए एक पॉच-बिंदु लिंकर्ट स्केल और एक व्यवस्थित साक्षात्कार अनुसूची बनाई गई है।

तालिका 1: भील कला के रूपांकन (मूल रूप)

क्र. सं.	डिजाइन	डब्ल्यूएमएस	रैंक	क्र. सं.	डिजाइन	डब्ल्यूएमएस	रैंक
1		3.82	मै	6		3.5	चतुर्थ
2		3.22	छठी	7		3.75	द्वितीय
3		3.65	तृतीय	8		2.89	आठवीं
4		2.76	नौवीं	9		3.19	सातवीं
5		3.43	वी	10		2.43	एक्स

प्रत्येक रूपांकन के लिए भारित औसत स्कोर (WMS) की गणना की गई। सबसे अधिक भारित औसत स्कोर वाले विषय को रैंक 1 दिया गया। भील ट्राइबल रूपांकन चुनने के लिए पसंदीदा विकल्प नीचे दिखाया गया है। तालिका नंबर 1 को पहला स्थान मिला, उसके बाद मोटिफ नंबर 7 को 3.75 के भारित औसत स्कोर के साथ दूसरा

स्थान मिला और मोटिफ नंबर 3 को 3.65 के भारित औसत स्कोर के साथ तीसरा स्थान मिला। अवरोही क्रम में अन्य रैंक वाले मोटिफ 6 (3.5), 5 (3.43), 2 (3.22), 9 (3.19), 8 (2.89), 4 (2.76) हैं और 2.43 WMS के साथ मोटिफ नंबर 10 सबसे कम पसंद किया जाने वाला डिज़ाइन था।

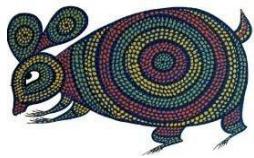
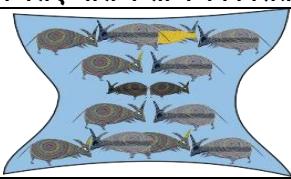
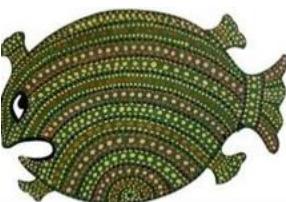
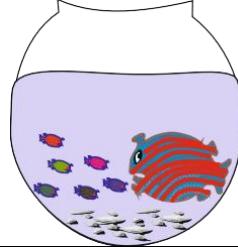
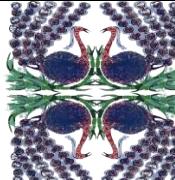
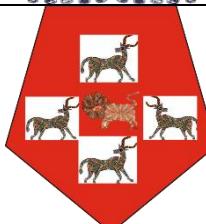
तालिका 2: भील जनजातीय कला के रूपांकनों के चयन के लिए विशेषज्ञों की प्राथमिकताएँ

क्र. सं.	मूल भाव सं	डब्ल्यूएमएस	रैंक आदेश
1	1	3.82	1
2	7	3.75	द्वितीय
3	3	3.65	तृतीय
4	6	3.50	चतुर्थ
5	5	3.45	वी
6	2	3.22	छठी
7	9	3.19	सातवीं
8	8	2.89	आठवीं
9	4	2.76	नौवीं
10	10	2.43	10

अधिक अनुकूलन के लिए, चयनित रूपांकनों को टोट बैग पर लागू किया गया, हालाँकि, फ़ाइल कवर, टेबल कवर, सोफा कवर और कुशन जैसे अन्य कपड़ा उत्पाद भी विकसित रूपांकनों के साथ बनाए जा सकते हैं। आगे बढ़ते हुए, विकसित उत्पाद को

इसकी स्वीकार्यता, रंग योजनाओं और सामान्य रूप को निर्धारित करने के लिए भारित औसत स्कोर का उपयोग करके भी मूल्यांकन किया गया।

तालिका 3: कुशन कवर के लिए भील कला के विकसित डिजाइन

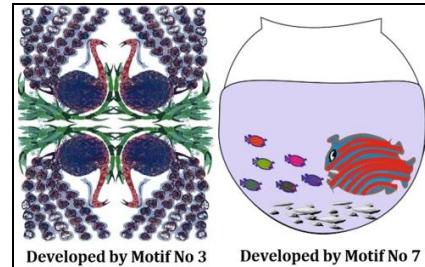
क्र. सं.	मूल भाव सं	मूल मूल भाव	टोट बैग के लिए भील कला के विकसित डिजाइन
1	5		
2	6		
3	7		
4	8		

मोटिफ नंबर 1, 7, 3 और 6 को WMS के रैंक ऑर्डर के अनुसार चुना गया। इसके अलावा कोरल ड्रा सॉफ्टवेयर का उपयोग करके भील कला के प्रत्येक चुने हुए मोटिफ के साथ डिजाइन का विकास शुरू हुआ, चार मोटिफ विकसित किए गए और टोट बैग के लिए प्रस्तुत किए गए। टेबल तीन नव विकसित डिजाइनों की डिजाइन व्यवस्था का मूल्यांकन भी यादचिक रूप से चयनित 50 उत्तरदाताओं के पैनल द्वारा किया गया तथा प्रत्येक डिजाइन व्यवस्था के लिए WMS की गणना की गई।

तालिका 4: टोट बैग के लिए भील कला के विकसित डिजाइनों के लिए विशेषज्ञों की प्राथमिकताएं

क्र. सं.	मूल भाव सं	डब्ल्यूएमएस	रैंक (ए)
1	3	3.58	मैं
2	2	3.44	द्वितीय
3	1	3.26	तृतीय
4	6	3.08	चतुर्थ

टोट बैग को विकसित डिजाइनों के आदर्श विकल्प के साथ अनुकूलित किया गया था जैसा कि नीचे दर्शाया गया है। तालिका 4.3.58 भारित औसत स्कोर के साथ रूपांकन संख्या 3 को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ, उसके बाद 3.44 WMS के साथ रूपांकन संख्या 2 को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ, 3.26 WMS के साथ रूपांकन संख्या 1 को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ तथा 3.08 WMS के साथ रूपांकन संख्या 6 को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। रैंक नंबर IV सबसे कम पसंद किया जाने वाला मोटिफ था। टोट बैग पर छपाई के लिए शीर्ष चयनित डिजाइन मोटिफ नंबर 3 और 7 हैं जैसा कि दिखाया गया है। आकृति 1.



चित्र 1: टोट बैग के लिए भील कला के चयनित शीर्ष दो डिजाइन

अंत में, सब्लिमेशन प्रिंटिंग की मदद से शीर्ष दो चयनित रूपांकनों को 12/16 इंच के टोट बैग पर प्रिंट किया गया। मोर के डिजाइन (विकसित रूपांकन संख्या 3) का उपयोग बैग के केंद्र में एक आकर्षक डिजाइन बनाने के लिए किया गया था। मछली के डिजाइन (विकसित रूपांकन संख्या 7) को भी टोट बैग के केंद्र में अनुकूलित किया गया था जैसा कि नीचे दिखाया गया है। चित्र 2.



चित्र 2: कुशन कवर पर चयनित मोटिफ का स्थान

टोट बैग में आकृति के स्थान का मूल्यांकन भी 50 उत्तरदाताओं के उसी पैनल द्वारा किया गया था और सभी डिजाइन लेआउट के लिए WMS निर्धारित किया गया था जैसा कि दिखाया गया हैचित्र 2 औरतालिका 5.

तालिका 5: कुशन कवर पर भील कला के डिजाइनों के स्थान के लिए विशेषज्ञों की प्राथमिकताएँ

क्र. सं.	डिजाइन नं.	डब्ल्यूएमएस	रैंक आदेश
1	3	3.17	1
2	7	2.92	2

डिजाइन 3 उत्तरदाताओं द्वारा समग्र अपील के संबंध में सबसे अधिक पसंद किया जाने वाला लेआउट है जिसका भारित औसत स्कोर 3.17 है और डिजाइन 7 सबसे कम पसंद किया जाने वाला लेआउट है जिसका भारित औसत स्कोर 2.92 है, जैसा कि इससे देखा जा सकता है। तालिका 5.

मध्य प्रदेश के भील कारीगर

पांच प्रसिद्ध भील कलाकारों के चित्रों का अध्ययन किया गया, जहां चित्रों के विषय शामिल हैं-

- थीम: चूजों के साथ एक बच्चा
- विषय: दो बंदर और पक्षी
- थीम: गांव की रखवाली करते देव
- थीम: एक दूल्हा और दुल्हन बारात के साथ जंगल में यात्रा करते हैं
- थीम: गायें जंगल में चर रही हैं और बगुले उनका साथ दे रहे हैं
- थीम: भील युवक अपनी बकरियों के लिए इमली के पत्ते तोड़ते हुए
- विषय: जंगल से लकड़ी प्राप्त करना
- विषय: स्मृति स्तंभ गटला को पशु और महुआ अर्पित करते भील
- थीम: एक पक्षी अपने साथी के पंख संवार रहा है
- विषय: मगरमच्छों का जोड़ा

तालिका 6: पांच प्रसिद्ध भील कलाकारों की चित्रकला का अध्ययन किया गया

एस। नंबरी	नाम	चित्र	पैटर्न्स	के बारे में
1.	अनीता बारिया			अनीता बारिया की 15 वर्षीय बेटी भूरी बाई ने अपनी माँ की तरह प्रकृति से प्रेरणा लेते हुए छह साल की उम्र से ही पेटिंग करना शुरू कर दिया था। भूरी अपनी माँ के नक्शेकदम पर चलते हुए चित्रकार बनना चाहती है। हाल ही में अनीता के देवर विजय बारिया ने भी पेटिंग करना शुरू कर दिया है।
2.	भूरीपिटोल की बाई			भील कलाकार भूरी बाई ने जे स्वामीनाथन के प्रोत्साहन पर पारंपरिक तरीकों से कैनवास पर काम करना शुरू किया। परिवार के घोड़े से शुरूआत करते हुए, उन्होंने पोस्टर रंगों के इस्तेमाल की आसानी पर आश्वर्य जताया। अब भोपाल में रहने वाली, उन्होंने प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं और अपनी कला में भील जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करना जारी रखा है, प्रकृति से लेकर आधुनिक तत्वों तक।
3.	भूरीजेर की बाई			झेर की भूरी बाई दो दशक पहले भोपाल आ गई थीं और वर्तमान में आईजीआरएमएस में दैनिक वेतन पर काम करती हैं। पिछले नौ वर्षों में, उन्होंने कैनवास पर ऐक्रेलिक पेटिंग में विशेषज्ञता रखते हुए एक भील समकालीन कलाकार के रूप में अपनी पहचान बनाई है।
4.	गंगू बाई			गंगू बाई, एक भील कलाकार हैं, जो गटला, गल बापसी, गद बापसी और गोहारी जैसे पारंपरिक भील अनुष्ठानों से प्रेरणा लेती हैं। उनकी पैटर्न्स स्मृति स्तंभों, पूर्ण की गई प्रतिज्ञाओं और चंचल पोल-क्लाइम्बिंग प्रतियोगिताओं के महत्व को दर्शाती हैं। गंगू बाई की कला भील समुदाय की जीवंत सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाती है, जिसमें प्रकृति उनके चित्रों का प्रमुख विषय बनी हुई है।

				
5.	जोर सिंह			<p>जोर सिंह, जिन्हें शुरू में भूरी बाई ने सिखाया था, ने भोपाल के बढ़ा तालाब में मछली पकड़ने के अपने अनुभवों से प्रेरित होकर जलीय जीवन पर ध्यान केंद्रित करते हुए पेटिंग को तेजी से अपनाया। उनकी जीवंत कला जानवरों और स्मृति स्तंभों को भी उजागर करती है। मध्य प्रदेश सरकार के लोक निर्माण विभाग में कार्यरत होने के बावजूद, जोर सिंह प्रकृति में कलात्मक प्रेरणा पाते रहते हैं।</p>

चयनित चित्रों को चित्र 3 और 4 में दर्शाए अनुसार लेखक द्वारा 300 ग्राम प्रति वर्ग मीटर के जलरंग कागज पर ऐक्रेलिक पेन का उपयोग करके विकसित किया गया तथा उन्हें चित्र 5 और 6 में दर्शाए अनुसार पत्रिका के कवर पेज पर लागू किया गया।



चित्र 3:

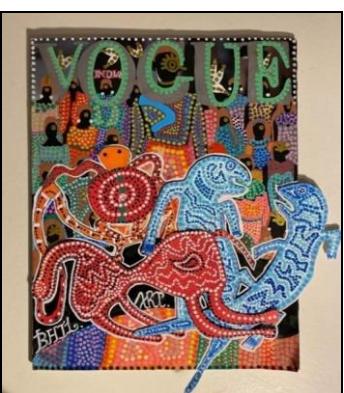


चित्र 4:

स्रोत: लेखक द्वारा विकसित



चित्र 5:



चित्र 6:

स्रोत: लेखक द्वारा विकसित

निष्कर्ष

अध्ययन जनजातियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों पर गहराई से प्रकाश डालता है, जिसमें पारंपरिक कला, शिल्प, संगीत और नृत्य शामिल हैं। ये सांस्कृतिक प्रथाएँ न केवल मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के समृद्ध ताने-बाने में योगदान करती हैं, बल्कि पारिस्थितिक ज्ञान को आगे बढ़ाने और सामुदायिक सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देने के साधन के रूप में भी काम करती हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आधुनिक वस्तों में भील कला से प्रेरित पैटर्न सांस्कृतिक विविधता और संरक्षण के साथ-साथ फैशन और डिजाइन उद्योगों की सौंदर्य अपील की कहानी को जोड़ते हैं। यह लोगों को इसके विषयों में निहित समृद्धि और सुंदरता को स्वीकार करने के लिए भी आमंत्रित करता है, जो आज के विश्वव्यापी समाज में एक सांस्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य करता है। एक पत्रिका के कवर में भील कला का अभिनव एकीकरण सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व में एक महत्वपूर्ण कदम है।

संदर्भ

- वात्या, एम. भारत में जनजातीय विकास नीतियाँ-इसकी समस्याएँ और संभावनाएँ। 2022।
- रस्तोगी, द्विकल. मध्य प्रदेश की कलात्मक विरासत। 2024।
- प्रीति. कुकरमठ मंदिर, मध्य प्रदेश में आदिवासी कलात्मक प्रभाव। 2022।
- सोनी, आभास, ऐशना. जनजातीय कला और संस्कृति। 2020।
- शिंदे, मेधा, सिंह, आर. मध्य प्रदेश के निमाड़ी के रहस्य: निमाड़ संस्कृति। कला और मानविकी में अनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल। 2021;1:21-24. doi:10.55544/ijrah.1.1.4.
- अनंत, आर.एस. त्रिपुरी के कलचुरी की कला और स्थापत्य कला। शोध प्रबंध, रानी दुर्गावित्ती विश्वविद्यालय, जबलपुर; 2005.
- बाजपेयी, एस.के. भारतीय कला। भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी; 1997.

8. चादर, एम.एल. अमरकंटक क्षेत्र के पुरावशेष। नई दिल्ली: एस.एस.डी.एन. प्रकाशन; 2017.
9. गैरोला, वी. भारतीय संस्कृत और कला संस्थान। लखनऊ: सरस्वती प्रेस; 1980.
10. गुप्ता, पी.एल. भारतीय वास्तुकला। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 1991.
11. जोशी, एम.सी. युग की भारतीय कला। जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार; 1995.
12. मिश्रा, आर. भारतीय कलाओं की रूपरेखा: वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य और नाटक। नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल; 2007.
13. मिश्रा, आर.एल. स्मारकों और वास्तुकला का इतिहास। जयपुर: राजस्थान साहित्य मंदिर; 1999.
14. राव, टी.ए.जी. हिंदू आइकनोग्राफी के तत्व, खंड 01. मद्रास: लॉ प्रिंटिंग हाउस; 1968.
15. शर्मा, आर. मध्य प्रदेश के पुरातत्व की संदर्भ पुस्तक। भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी; 1974.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.